



Mr.selendr

18 May 1987

08:55 AM

Kolhapur

Model: Gem-Report

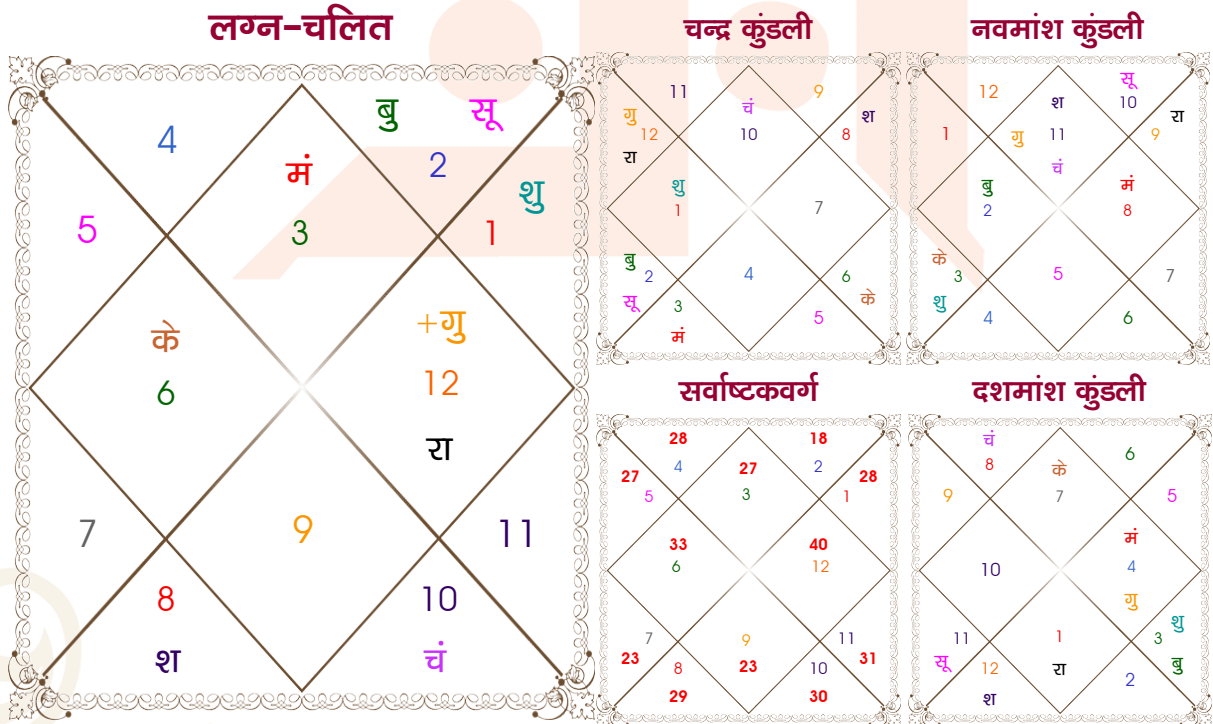
Order No: 120014101

तिथि 18/05/1987 समय 08:55:00 वार सोमवार स्थान Kolhapur चित्रपक्षीय अयनांश : 23:40:47
अक्षांश 16:42:00 उत्तर रेखांश 74:19:00 पूर्व मध्य रेखांश 82:30:00 पूर्व स्थानिक संस्कार -00:32:44 घंटे

पंचांग	अवकहड़ा चक्र
साम्पातिक काल : 00:03:25 घं	गण : मनुष्य
वेलान्तर : 00:03:38 घं	योनि : नकुल
सूर्योदय : 06:01:25 घं	नाडी : अन्य
सूर्यास्त : 18:57:06 घं	वर्ण : वैश्य
चैत्रादि संवत : 2044	वश्य : जलचर
शक संवत : 1909	वर्ग : सिंह
मास : ज्येष्ठ	रुजा : अन्य
पक्ष : कृष्ण	हंसक : भूमि
तिथि : 6	जन्म नामाक्षर : जा-जामवंत
नक्षत्र : उत्तराषाढ़ा	पाया(रा.-न.) : लौह-ताम्र
योग : शुक्ल	होरा : गुरु
करण : गर	चौघड़िया : काल

विंशोत्तरी	योगिनी
सूर्य 1वर्ष 8मा 24दि	संकटा 2वर्ष 3मा 22दि
गुरु	मंगला
10/02/2024	09/09/2025
10/02/2040	09/09/2026
गुरु 30/03/2026	मंगला 19/09/2025
शनि 11/10/2028	पिंगला 09/10/2025
बुध 17/01/2031	धान्या 09/11/2025
केतु 23/12/2031	भामरी 19/12/2025
शुक्र 23/08/2034	भद्रिका 08/02/2026
सूर्य 12/06/2035	उल्का 10/04/2026
चन्द्र 11/10/2036	सिद्धा 20/06/2026
मंगल 17/09/2037	संकटा 09/09/2026
राहु 10/02/2040	

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			13:53:55	मिथु	आर्द्रा	3	राहु	बुध	---	0:00			
सूर्य			03:00:04	वृष	कृतिका	2	सूर्य	शनि	शत्रु राशि	1.50	कलत्र	पितृ	जन्म
चंद्र			06:08:43	मक	उत्तराषाढ़ा	3	सूर्य	बुध	सम राशि	1.15	पुत्र	मातृ	जन्म
मंगल			04:22:36	मिथु	मृगशिरा	4	मंगल	शुक्र	शत्रु राशि	1.25	ज्ञाति	भ्रातृ	विपत
बुध			15:27:13	वृष	रोहिणी	2	चंद्र	गुरु	मित्र राशि	1.09	भ्रातृ	ज्ञाति	सम्पत
गुरु			24:15:59	मीन	रेवती	3	बुध	राहु	स्वराशि	1.38	अमात्य	धन	वध
शुक्र			07:06:07	मेष	अश्विनी	3	केतु	राहु	सम राशि	1.24	मातृ	कलत्र	मित्र
शनि	व		25:45:32	वृश्चि	ज्येष्ठा	3	बुध	राहु	शत्रु राशि	1.16	आत्मा	आयु	वध
राहु	व		16:48:24	मीन	रेवती	1	बुध	बुध	सम राशि	---	ज्ञान	वध	
केतु	व		16:48:24	कन्या	हस्त	3	चंद्र	शनि	शत्रु राशि	---	मोक्ष	सम्पत	

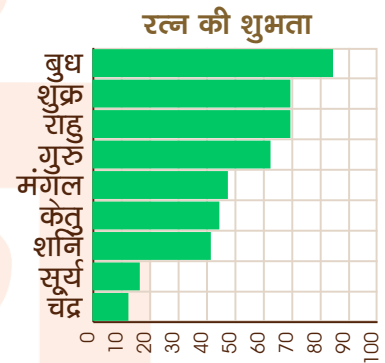


रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	84%	कम खर्च, स्वास्थ्य, सुख
हीरा	शुक्र	69%	धनार्जन, कम खर्च, सन्तति सुख
गोमेद	राहु	69%	व्यावसायिक उन्नति
पुखराज	गुरु	62%	व्यावसायिक उन्नति, दम्पति
मूंगा	मंगल	47%	रोग, हानि, शत्रु व रोग
लहसुनिया	केतु	44%	ग्रह कलेश, व्यय
नीलम	शनि	41%	शत्रु व रोग, दुर्घटना, नेष्ट भाग्य
माणिक्य	सूर्य	16%	व्यय, पराक्रम हानि
मोती	चंद्र	12%	दुर्घटना, धन हानि



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
सूर्य	09/02/1989	41%	25%	55%	84%	68%	56%	16%	56%	19%
चंद्र	10/02/1999	28%	38%	47%	91%	62%	69%	41%	56%	19%
मंगल	10/02/2006	28%	25%	61%	72%	68%	69%	41%	56%	53%
राहु	10/02/2024	0%	0%	22%	84%	62%	75%	52%	81%	19%
गुरु	10/02/2040	28%	25%	55%	72%	75%	56%	41%	69%	44%
शनि	10/02/2059	0%	0%	22%	91%	62%	75%	58%	75%	19%
बुध	10/02/2076	28%	0%	47%	97%	62%	75%	41%	69%	44%
केतु	10/02/2083	0%	0%	55%	84%	62%	75%	16%	56%	59%
शुक्र	11/02/2103	0%	0%	47%	91%	62%	81%	52%	75%	53%

Pt. Nagraj B Purohit

499 C Vod Aajad Gali Kolhapur
9423277977

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होती है। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

Pt. Nagraj B Purohit

499 C Vod Aajad Gali Kolhapur
9423277977

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए पन्ना रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है।

पन्ना आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

इसे धारण करने से आपके जीवन में विशेष ऊर्जा का प्रवाह होगा। आपकी प्रतिभा बढ़ेगी। इस रत्न को धारण करने से आपके रुके हुए कार्य बन सकते हैं। स्वास्थ्य व सुख सम्पत्ति का लाभ मिल सकता है। आपको कार्य करने पर जो श्रेय नहीं मिल पाता है वह प्राप्त होने लगेगा। इस रत्न को धारण करने से आपको कुछ ही समय में सुख की अनुभूति होगी। अतः यह रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के जीवन पर्यन्त धारण करें तो लाभ होगा।

आपके लिए हीरा, गोमेद एवं पुखराज रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

मूंगा, लहसुनिया व नीलम रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

माणिक्य व मोती रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध द्वादश भाव में स्थित है। आप बुध ग्रह की शुभता पाने के लिए पन्ना रत्न धारण करें। पन्ना रत्न आपको बुद्धिमान, विचारशील और विवेकी व्यक्ति बनेंगे। आपको धर्म के प्रति आस्थावान बनाएगा। यह रत्न आपको एक स्पष्ट वक्ता बनाएगा। बुध रत्न पन्ना से आपको आलस्य से बचाएगा। तथा रत्न शुभता से आप दूसरों के धन का लालच नहीं करेंगे। पन्ना रत्न शुभता आपको उच्च पद और प्रतिष्ठा देगा। बौद्धिक योग्यता से आप अपने शत्रुओं को परास्त करने में भी यह रत्न शुभ फल प्रदान करेगा।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में बुध लग्नेश एवं चतुर्थेश होते हैं। लग्नेश बुध का रत्न पन्ना आपके लिए जीवन रत्न के समान कार्य करेगा। पन्ना रत्न आपको उत्तम स्वास्थ्य, बौद्धिक योग्यता दे सकता है। पन्ना रत्न शुभता से आपके स्वास्थ्य सुख में वृद्धि होगी। बुध आपके लिए चतुर्थेश है इसलिए पन्ना रत्न धारण करने से मातृ पक्ष एवं भू-संपत्ति पक्ष बलवान हो सकता है। यह रत्न आपको विनोदी, बुद्धिमान एवं गणितीय कौशल को भी बढ़ायेगा। पन्ना रत्न की शुभता से आप दैनिक व्यवसाय के क्षेत्र में सफलता दे सकता है।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत्त होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ॐ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न ३ रत्ती का कम से कम, अन्यथा ६ रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र एकादश भाव में स्थित है। शुक्र ग्रह की पूर्ण शुभता प्राप्त करने के लिए आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। हीरा रत्न आपको उदार, सदाचार संपन्न, सुशील और परोपकारी बनाएगा। हीरा रत्न से आप अपने वाक्चातुर्य के कारण प्रसिद्ध होंगे। अनेक वाहनों का सुख आपको यह रत्न दे सकता है। शुक्र रत्न हीरे की शुभता आपको समृद्धि और सम्पन्नता देगी। इस रत्न प्रभाव से नियमित रूप से आपके पास धनागमन होता रहेगा और दिनों दिन धनवृद्धि होती जाएगी।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में शुक्र पंचमेश एवं द्वादशेश है। शुक्र लग्नेश बुध के मित्र भी है। त्रिकोण भाव के स्वामी होने के कारण शुभ ग्रह है। शुक्र ग्रह की शुभता को बढ़ाने के लिए आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न आपको संतान से सुखी, विद्वान बना सकता है। हीरा रत्न प्रभाव से आप को विदेश जाने के अवसर, व्ययों पर नियंत्रण लगायें रखने

Pt. Nagraj B Purohit

499 C Vod Aajad Gali Kolhapur
9423277977

में सफल हो सकते हैं। शुक्र रत्न हीरे से आप भोगविलास के आदी नहीं होंगे। यह रत्न आपके दांपत्य जीवन को सुखमय बनाए रखने में सहयोगी हो सकता है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ॐ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा रत्नी से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु दशम भाव में स्थित है। अतः आप राहु रत्न गोमेद धारण करें। गोमेद रत्न आपको बलवान और निडर बनाएगा। गोमेद की शुभता से आप बुद्धिमान, परोपकारी, सफल, सम्मानित, कीर्तिमान और श्रेष्ठ बनेंगे। रत्न शुभता से आप कार्यक्षेत्र में अपने शत्रुओं को परास्त करने में सफल होंगे। रत्न शुभता आपको व्यापारिक निपुणता और यात्राओं से लाभ देगी। गोमेद रत्न की अनुकूलता आपको अदालती कामों में विजय देगी। इसके अलावा रत्न प्रभाव से आपके कामों में नियमितता आयेगी।

राहु मीन राशि में स्थित है व इसका स्वामी गुरु दशम भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण कर आप आजीविका क्षेत्र में चातुर्य से उन्नति प्राप्त करेंगे। यह रत्न आपको कर्मक्षेत्र में उच्च पद, सम्मान एवं अधिकार शक्ति देगा तथा रत्न पहन कर आप व्यवहार कुशल होंगे। रत्न शुभता से आप धनवान, बुद्धिमान और पितृ-सुखयुक्त होंगे। यह रत्न आपको आजीविका क्षेत्र में व्यर्थ विवादों में सम्मिलित होने से बचाएगा। इस रत्न को धारण करने से आपको अधीनस्थों का सुख-सहयोग प्राप्त होगा। तथा यह रत्न आपके कार्यभार में कमी करेगा। आपके कार्यों में नियमितता आएगी। न्याय और परिश्रम कुशलता में वृद्धि होगी। आपको उत्तम व्यक्तियों के संपर्क में रहने के अवसर प्राप्त होंगे।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान कराएँ। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ॐ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम 4 रत्नी और अधिकतम 8-10 रत्नी होना चाहिए।

Pt. Nagraj B Purohit

499 C Vod Aajad Gali Kolhapur
9423277977

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु दशम भाव में स्थित है। आपके लिए गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करना आपके लिए शुभदायक रहेगा। यह रत्न आपको चरित्रवान और स्वतंत्र विचारक बनाएगा। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको विवेकी, न्यायी और सत्यवादी भी बनाएगा। पुखराज रत्न की शुभता आपको शास्त्रों का विधिवत ज्ञान होगा। पुखराज रत्न आपको उत्तम वाहनों का सुख देगा। भूमि सुख और भूमि के माध्यम से खूब लाभ देगा। रत्न प्रभाव से आप अपने माता-पिता का अत्यधिक आदर करने वाले बनेंगे। आप खूब धन कमाकर, ऐश्वर्यवान, सुखी और समृद्ध बनेंगे। आप सुंदर वस्त्र और आभूषणों से युक्त होंगे।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में गुरु सप्तमेश एवं दशमेश है। गुरु की पूर्ण शुभता प्राप्त करने के लिए आप पुखराज रत्न धारण करें। पुखराज रत्न धारण करने से आपके जीवन के सुखों में बढ़ोतरी हो सकती है। यह रत्न आपको स्वाभिमानी, उच्च मनोबल, पिता सुख, कार्यक्षेत्र में लाभ दे सकता है। सप्तमेश का रत्न होने के कारण पुखराज आपका दांपत्य जीवन सुखी, भाग्य वृद्धि व धर्म के क्षेत्र में सम्मान दे सकता है। गुरु रत्न की शुभता से आपको आजीविका क्षेत्र में पद और धन दोनों की प्राप्ति हो सकती है।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूठी में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ॐ वृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरूरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थों का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार हैं- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्नी से लेकर ८ रत्नी का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल प्रथम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा धारण से आप दुस्साहसी हो सकते हैं। जिसके कारण दुर्घटनाओं और चोटों की स्थिति बन सकती हैं। अत्यधिक दबाव में कार्य करने में आप असमर्थ हो सकते हैं। मूंगा रत्न आपको सिर दर्द दे सकता है। रत्न प्रभाव से वाणी पर नियंत्रण कम और आपका अत्यधिक क्रोध का स्वभाव हो सकता है। इसके अलावा यह रत्न धारण करने पर आपको अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में विशेष प्रयास करने पड़ सकते

हैं। स्वास्थ्य की कमी के चलते बुखार आपको अपने प्रभाव में ले सकता है। इसके अतिरिक्त लग्न भाव में मंगल चतुर्थ, सप्तम एवं अष्टम भाव को देख रहा है। अतः इस रत्न को यदि आप धारण करते हैं तो सुख, ग्रहस्थ जीवन एवं बाधाओं का सामना भी आपको करना पड़ सकता है।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में मंगल षष्ठ भाव एवं आय भाव के स्वामी है। छटे भाव का स्वामित्व होने के कारण मंगल रत्न मूंगा धारण करना आपके लिए कुछ कष्टप्रद हो सकता है। मूंगा रत्न पहनना आपको नेत्रों से संबंधित रोग शीघ्र दे सकता है। आप कम मिलनसार हो सकते हैं। लड़ाई-झगड़ों से बचने का प्रयास करेंगे। आपत्ति आने पर आप अत्यधिक साहस भाव से काम लेंगे। जिसके कारण चोट आदि की स्थिति बन सकती है। यह रत्न आपको क्रोधी, सख्त बोलने वाले, रक्त विकारी एवं हठी बना सकता है। मूंगा रत्न आपको शत्रुओं द्वारा हानि दे सकता है। अप्रयाशित घटनाओं के कारण आर्थिक स्थिति में अस्थिरता बन सकती है। आय क्षेत्रों में चोरी आदि का भय हो सकता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु चतुर्थ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु लहसुनिया रत्न धारण करने से आप सत्यभाव से विमुख हो सकते हैं। लहसुनिया रत्न प्रभाव से आप कुछ कठोर हो सकते हैं। कार्यों में आपके द्वारा लापरवाही हो सकती है। यह रत्न आपके जीवन के अनेक प्रकार के दुःखों का कारण बन सकता है। दूसरों की आलोचना में आप आनंद का अनुभव करेंगे। मित्रों के द्वारा आपको कई प्रकार के कष्ट मिल सकते हैं। आपको आलोचना का सामना करना पड़ सकता है। आपके अंदर उत्साह की कमी हो सकती है। पैतृक धन का विनाश हो सकता है। लहसुनिया रत्न से धनार्जन के लिए आपको देश-विदेश भटकना पड़ सकता है। आर्थिक विपन्नता आपको परेशान कर सकती है।

केतु कन्या राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध द्वादश भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपको शयन संबंधी सुख की कमी होगी। यह रत्न आपको अनिद्रा रोग भी देगा तथा रत्न पहनने पर आपको परिवार से दूर रहना पड़ सकता है। जीवनसाथी से सुख में कमी तथा विवाह में भी विलम्ब की स्थिति बन सकती है। इस रत्न को पहनने पर आपकी विदेश यात्राएं स्थगित हो सकती है। अथवा यात्राओं में असफलता की स्थिति बन सकती है। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको पैरों की तकलीफ, नाखूनों से संबंधित तकलीफ अथवा दांतों से संबंधित रोग देगा। रत्न धारण से आपकी धार्मिक यात्राओं में सुख की कमी बनी रहेगी।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि षष्ठ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शनि रत्न नीलम पहनने से आपका स्वास्थ्य प्रतिकूल हो सकता है। यह रत्न आपकी पाचनशक्ति को कमजोर कर सकता है। आपकी कम भूख की परेशानी हो सकती है। यह रत्न आपको शत्रुओं से भयभीत रख सकता है। आप प्रतिवादियों से भय खा सकते हैं। बंधु-बांधवों का सुख आपको समय पर न मिल पाए। रत्न प्रभाव आपमें

Pt. Nagraj B Purohit

499 C Vod Aajad Gali Kolhapur
9423277977

अहंकार भाव ला सकता है। यश, संपत्ति के अधिकारों में कमी हो सकती है। विषय वासनाओं में आप अधिक रत हो सकते हैं। गुणीजनों का अनजाने में आपके द्वारा अनादर हो सकता है। नीलम रत्न धारण से आपके ऋण भुगतान मानसिक चिंता का कारण बन सकते हैं।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में शनि नवमेश एवं अष्टमेश है। नीलम रत्न अष्टमेश शनि का रत्न होने के कारण इस रत्न में शुभता की आंशिक कमी हो सकती है। नीलम पहनने पर आपको स्वास्थ्य के पक्ष से पीड़ा का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपको वात, पित्त एवं चमरीग से परेशान कर सकता है। इसके अतिरिक्त नीलम धारण से आपको भाग्य का सहयोग कुछ कम प्राप्त होगा। ईष्ट फल प्राप्त होने में विलम्ब हो सकता है। यह रत्न आपको राज्य पक्ष से दंड एवं कष्ट दे सकता है। माता-पिता के स्नेह में कमी कर सकता है। नीलम रत्न आपकी परिश्रम क्षमता को प्रभावित कर सकता है। शनि रत्न नीलम आपकी विदेश यात्राओं में बाधाएं दे सकता है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य द्वादश भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपको धर्मार्थ कार्यों में सुरुचि की कमी हो सकती है। आप दिखावों के लिए अत्यधिक व्यय कर सकते हैं। यह व्यय परोपकार से हटकर अन्य कार्यों पर हो सकते हैं। माणिक्य रत्न प्रभाव से व्यय व्यर्थ के कार्यों पर भी अधिक हो सकते हैं। आंखों के रोग आपको नज़र दोष दे सकते हैं। आपको चश्मे का प्रयोग करना पड़ सकता है। माणिक्य रत्न धारण करने पर गेहूं, सोना एवं चांदी इत्यादि क्षेत्रों का चयन आजीविका क्षेत्र के रूप में करने से आपको बचना होगा। इसके अलावा बिजली का काम, कच्चा कोयला या हाथी दांत से जुड़े क्षेत्रों में कार्य करना भी आपके लिए आंशिक रूप से अनुकूल नहीं रहेगा।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में सूर्य तृतीय भाव का स्वामी है। तृतीयेश सूर्य का माणिक्य रत्न आपको अपने सभी शुभ फल देने में समर्थ नहीं है। माणिक्य रत्न धारण करने पर आप दुःसाहसी होकर अपनी शारीरिक हानि करा सकते हैं। इस रत्न प्रभाव से आपकी परिश्रम क्षमता का ह्रास हो सकता है। आपकी ओजस्विता में कमी हो सकती है। माणिक्य रत्न आपको क्रोधी और कठोर बना सकता है। आपका स्वभाव ही मित्रवर्ग से आपके संबंधों में कड़वाहट का कारण बन सकता है। भाई-बहनों का सुख-सहयोग कम ही मिल पाएगा। सूर्य रत्न माणिक्य आपको प्रचार-प्रसार क्षेत्रों में बाधाएं दे सकता है। आपको यात्राओं में सुख-सुविधा की कमी का अनुभव हो सकता है।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती पहनने पर जल संबंधित रोगों का भय आपको हो सकता है। आपमें ईर्ष्या भाव आ सकता है। मातृ सुख बाधित हो सकता है। मोती रत्न प्रभाव से आपको फेफड़ों संबंधित परेशानियां हो सकती हैं। यह रत्न आपको मनोविकार, चिन्ता नजला जुकाम व खांसी भी दे सकता है। मोती रत्न प्रभाव से आपकी माता के स्वास्थ्य में

Pt. Nagraj B Purohit

499 C Vod Aajad Gali Kolhapur
9423277977

कमी हो सकती है। ससुराल पक्ष से स्नेह प्रभावित हो सकता है। माता के साथ आपके संबंध अपेक्षाकृत बहुत अनुकूल नहीं रहेंगे। मोती रत्न धारण करने पर आपको किसी बंधन के कारण दुःख का सामना करना पड़ सकता है। विषय वासना के प्रति आपकी रुचि अधिक हो सकती है।

आपकी मिथुन लग्न की कुंडली में चंद्र दूसरे भाव के स्वामी है। चंद्र की अशुभता प्राप्ति से बचाव के लिए आपको चंद्र रत्न मोती धारण करना सही नहीं होगा। यह रत्न आपको यात्राप्रिय बना सकता है। पर्यटन का शौक आपको वन, पर्वत तथा दर्शनीय स्थलों पर विचरण करने की प्रवृत्ति दे सकता है। रत्न प्रभाव से आपकी परोपकार भावना में आंशिक रूप से कमी हो सकती है। यह रत्न आपको कलाहीन बना सकता है। मोती रत्न आपके मन में अस्थिरता का भाव ला सकता है। यह रत्न आपको विनयरहित बना सकता है। आप प्रवासी और बंधुशत्रु हो सकते हैं। मोती रत्न धारण करने पर आप को सात्विक भोजन की कमी का अनुभव हो सकता है। यह रत्न कुटुंब स्नेह में भी उतार-चढ़ाव ला सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

गुरु

(10/02/2024 - 10/02/2040)

गुरु की दशा में आपका पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पन्ना, गोमेद, हीरा व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया, नीलम, माणिक्य व मोती रत्न नेष्ट हैं नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि

(10/02/2040 - 10/02/2059)

शनि की दशा में आपका पन्ना, हीरा व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा, लहसुनिया, माणिक्य व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

Pt. Nagraj B Purohit

499 C Vod Aajad Gali Kolhapur
9423277977

बुध
(10/02/2059 - 10/02/2076)

बुध की दशा में आपका पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा, लहसुनिया, नीलम व माणिक्य रत्न नेष्ट हैं और मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

केतु
(10/02/2076 - 10/02/2083)

केतु की दशा में आपका पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, लहसुनिया, गोमेद व मूंगा रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम, माणिक्य व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र
(10/02/2083 - 11/02/2103)

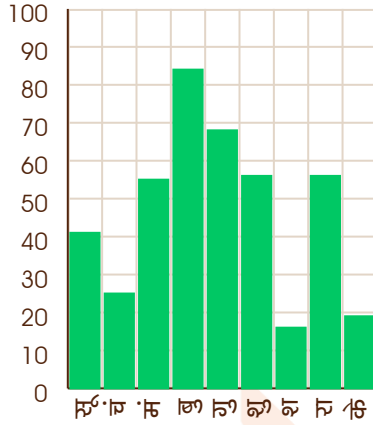
शुक्र की दशा में आपका पन्ना, हीरा व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, लहसुनिया व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

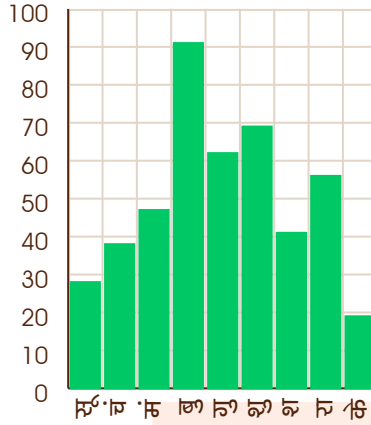
मूंगा रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

दशा ग्राफ

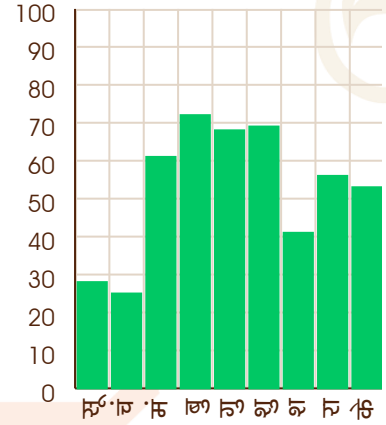
सूर्य - 09/02/1989



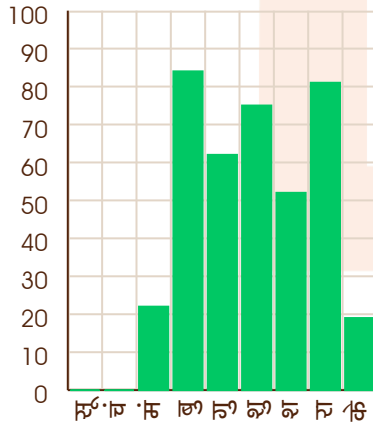
चन्द्र - 10/02/1999



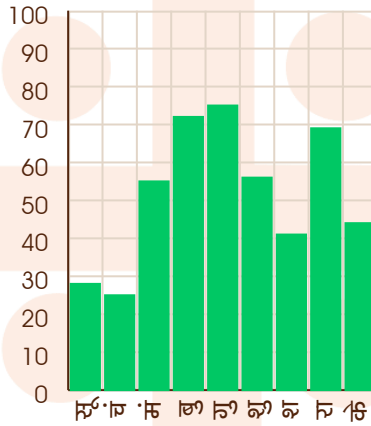
मंगल - 10/02/2006



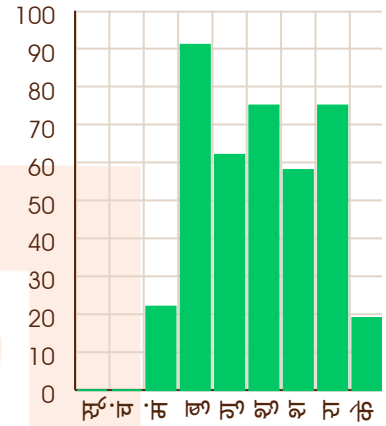
राहु - 10/02/2024



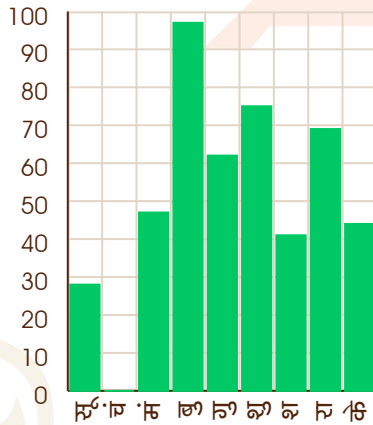
गुरु - 10/02/2040



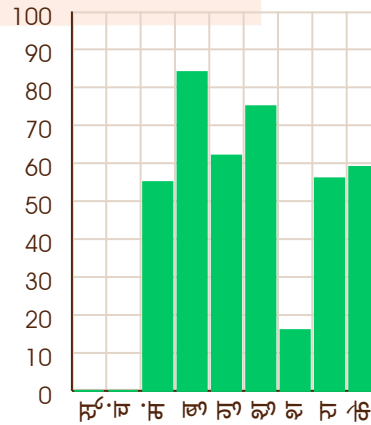
शनि - 10/02/2059



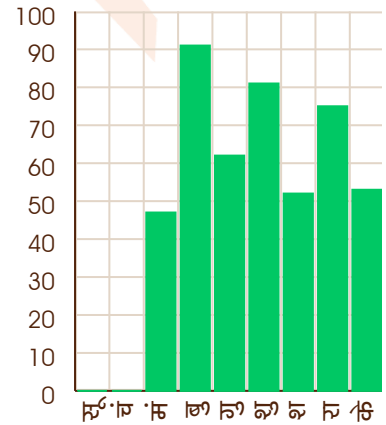
बुध - 10/02/2076



केतु - 10/02/2083



शुक्र - 11/02/2103



Pt. Nagraj B Purohit

499 C Vod Aajad Gali Kolhapur

9423277977